

नूतनवाग्धारा
संकल्पक्रम
विक्रमनिरतः सिद्धि

ISSN 0976-092X

साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ (Peer Reviewed) पत्रिका

नूतनवाग्धारा नूतनवाग्धारा

अंक - 37, वर्ष : 12 (मार्च, 2019)

यह अंक.....
पूर्वोत्तर भारत से....

नूतनवाग्धारा

आग, जो शीतल करे, किंतु ठंडी न हो !!!

संपादक : डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

अतिथि संपादक : डॉ. अलखनिरंजन सहाय

आलोइन-विलोइन

1. असमीया कथा-साहित्य के तीन दशक : कतिपय वैशिष्ट्य / डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी / 87
2. त्रिपुरी लोकनृत्य : एक परिचय / डॉ. बीना देबबर्मा / 89
3. असमीया बाल-साहित्य : दशा एवं दिशा / डॉ. मनिका शङ्किया / 92
4. पूर्वोत्तर में हिंदी तथा भाषाई मीडिया की चुनौतियाँ / रविशंकर रवि / 95
5. पूर्वोत्तर में हिंदी-शिक्षण की चुनौतियाँ और समाधान / दिगंत बोरा / 97
6. भाषिक-सांस्कृतिक विविधता का राज्य नागालैंड / डॉ. चन्द्रशेखर चौबे / 99
7. बूरी-बूत युल्लो : उत्पत्ति, विकास एवं आयोजन / डॉ. जमुना बीनी तादर / 103
8. 'नोक्ते' जनजाति और उनके लोकगीत / डॉ. अरुण कुमार पांडेय / 105
9. पूर्वोत्तर भारत : जीवन-शैली एवं लोकसाहित्य / डॉ. वी. एम. बरेजा / 109
10. भूपेन हाजारिका के गीतों में प्रकृति-चित्रण / डॉ. जोनाली बरुवा / 112
11. अरुणाचलप्रदेश के गालो जनजातीय समाज की एक झलक / जुम्केन निनु / 115
12. पूर्वोत्तर की सात बहनें / अंचल कुमारी राय / 117
13. असमीया संस्कृति का बदलता परिदृश्य / दिप्पी दत्त / 120
14. अरुणाचलप्रदेश के आदिवासियों की मृत्यु-विषयक अवधारणा / वीरेंद्र परमार / 122
15. लुसप्राय आहोम धर्म : अतीत से वर्तमान तक / बेबी विश्वकर्मा / 125
16. पेड़-पौधों पर आधारित मणिपुरी मुहावरों का संग्रह, हिंदी अनुवाद एवं विश्लेषण / तेनसुबम मंलेम्बा सिंह / 127
17. असम राज्य को लेकर कहीं-अनकहीं बातें (संकलन) / प्रिया खरवार / 129
18. डॉ. भूपेन हाजारिका के गीतों में समन्वय के स्वर / कुल प्रसाद उपाध्याय / 130

कालप्रवाह

1. पहचान / दिगंत बोरा / 133

अंतर्निनाद

1. मोदी समीपेषु (मूल असमीया- धीरेन चंद्र शर्मा) / अनुवाद- डॉ. रमानाथ त्रिपाठी / 137
2. सागर देखा है? (मूल असमीया- देवकांत बरुवा) / अनुवाद- डॉ. रमानाथ त्रिपाठी / 137
3. तीन अनागत गीत / डॉ. अजय प्रसून / 147

अतीत के गवाक्ष

1. बचपन की हेरथ / डॉ. अग्निशेखर / 138
2. मरालैंड की स्मृतियाँ / डॉ. बृजेन्द्र कुमार अग्निहोत्री / 141
3. हंसा उड़ि जइहो वहि देस / अरुण कुमार तिवारी / 146
4. चिट्ठा, चिरंगा, कंचा, गोली... न जाने क्या..क्या.. / सतेंद्र कुमार शुक्ल / 148

समीक्षा

1. पौराणिक आधार पर वर्तमान के सच की अभिव्यक्ति : बंदिनी / डॉ. सुधीर कुमार शर्मा / 143

असमीया बाल-साहित्य : दशा एवं दिशा

डॉ. मनिका शङ्किया*

बालकों का मन बड़ा विचित्र होता है। उनके बुद्धि, विचार, रुचि के अनुकूल साहित्य लिखना कष्टसाध्य है। क्योंकि इसी समय उनके शारीरिक विकास के साथ ही मानसिक विकास भी द्रुत गति के साथ होता है। अतः ऐसी अवस्था में उनकी वर्धित आयु के साथ-साथ मानसिक बुद्धि-वृत्ति तथा भाव-चिन्ता के साथ मेल रखने वाले साहित्य से परिचय करवाना भी अति आवश्यक होता है। बालकों के मानसिक विकास हेतु दया, स्नेह, सहानुभूति, कल्पनाशीलता आदि सुकुमार वृत्तियों का उत्कर्ष करने, जिज्ञासा वृद्धि करने, आत्मकेंद्रितता के स्थान पर सामाजिकता का विकास करने, नियमानुवर्तिता आदि गुणों की शिक्षा आदि बाल-साहित्य का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

असमीया बाल-साहित्य के विकास क्रम पर आलोचना करते समय हम देखते हैं कि प्राचीन असमीया साहित्य में बाल-साहित्य की अलग पहचान नहीं थी। श्रीमंत शंकरदेव, माधवदेव द्वारा रचित बालक कृष्ण, राम का रोचक वर्णन, 'भीम चरित', 'कानखोवा' आदि कहानियों के जरिए वयस्क और बालक सभी का मनोरंजन हो जाता था। आधुनिक युगीन बाल-साहित्य की शुरुआत 'अरुणोदय' (1846) नामक पत्रिका से ही माना जाता है। इस पत्रिका में प्रकाशित बाइबिल अथवा अन्य नैतिक कहानी आदि से बालकों को मानसिक तृप्ति देने का प्रयास किया गया था। तत्पश्चात् 'जोनाकी' (1889) नामक पत्रिका में भी ऐसे ही महान प्रयास किये गए। असम के भारतेन्दु कहे जाने वाले रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने बालकोपयोगी कई रचनाएँ कीं। उनमें से 'कका आरु नाति लरा', 'जुनुका', 'बुद्धि आइर साधु', आदि उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा लम्बोदर बॅरा, रत्नेश्वर महंत, बेणुधर राजखोवा आदि ने बालकों के लिए पाठ्यपुथि, साहित्य आदि की रचना की। बलदेव महंत, हिरण्यमयी देवी, मुहम्मद चोलेमान खाँ, दुर्गाप्रसाद मजिन्दार बरुवा, आनंद आगरवाला, धनाइ बॅरा आदि ने बाल कविता लिखकर बाल-साहित्य-भंडार को समृद्ध किया। डॉ. वाणीकांत काकति की 'पखिला, नवकांत बरुवा की 'आखरर जखला', त्रैलोकेश्वरी बरुवानी की 'संधियार साधु', अतुलचंद्र दास की 'असमीया साधु' आदि अन्यतम ग्रंथ हैं। इसी दौर की सौजन्यमयी दास कृत 'यादुकरी बुद्धि हातत बलिराम', 'आइतार फुलनि बारीर मौ मात', निर्मला बॅरा कृत 'शिशु मनर विचित्रता', आदि भी काफी जनप्रिय बाल-साहित्य रहा। अतुलचंद्र हाजारिका का 'रामायणर रहघरा', नवीनचंद्र बरदलै का 'हातेमताई', विरिचिकुमार बरुवा का 'जातकमाला', मित्रदेव महंत

का 'मौ भारत', महेंद्रनाथ भट्टाचार्य का 'भारतीय काहिनी', महिम बॅरा का 'बत्रिश पुतलार साधु', तरुण बॅरा का 'भीष्म बीरर साधु', कमलाक्षी का 'नचिकेता' आदि आज भी बालक तथा किशोर उतने ही चाव से पढ़ते हैं।

पौराणिक आख्यानों पर आधारित बाल-साहित्य के अतिरिक्त वर्तमान युगोपयोगी विषयवस्तुओं को लेकर भी बाल-साहित्य लिखे जाने लगे हैं। विज्ञान की विचित्र कथा, आविष्कार, साहसिक अभियान की कथाएँ तथा रोचक विज्ञान की सत्य घटनाओं के विवरण आदि का बालक मन पर अधिक प्रभाव पड़ता है, और उनके मन में भी विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। विज्ञान से संबंधित बाल-साहित्य में से डॉ. रोहिनी बरुवा कृत 'विज्ञानर कथा', कालिनाथ शर्मा कृत 'प्रकृतिर पुतला खेला', रघुनाथ देव छौधुरी कृत 'मानव सभ्यता', डॉ. भुवन मोहन दास कृत 'मानव युगर आदि कथा', कल्याण तालुकदार कृत 'एवरेस्ट विजय', आदि उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा डॉ. प्रसन्न गोस्वामी, हरिप्रसन्न दास, महेंद्र बरठाकुर, योगेन बरुवा, डॉ. महेंद्र बॅरा, दीनेश गोस्वामी, विजयकृष्ण बरुवा, बंदिता फुकन आदि ने भी बालकों में वैज्ञानिक सोच बढ़ाने के उद्देश्य से साहित्य का सृजन किया।

असमीया बाल-साहित्य का अधिकांश बाल-कविता के रूप में मिलता है। यहाँ उल्लेख्य है कि बाल-पत्रिका, अखबारों के बाल-पृष्ठ में बाल-कविताएँ तो ढेर सारी मिलती हैं, लेकिन पुस्तक के रूप में कम ही मिलती हैं। हालाँकि बाल कविताएँ ही बाल-मन को अधिक प्रभावित करती हैं। असमीया बाल-कवि के रूप में ज्योतिप्रसाद आगरवाला का नाम सर्वोपरि आता है। उनके द्वारा

कवि 'ज्योति रामायण', 'कम्पुर सपोन', 'अकनमान लोरा', 'अकनमान छोवाली' आदि जनप्रिय रचनाएँ हैं। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के प्रथमार्द्ध में बलदेव महंत, सोलेमान खाँ, धनाइ बॅरा, अनंद आगरवाला आदि ने बालोपयोगी अनेक कविताएँ लिखीं। आगे चलकर नवकांत बरुवा, लीला गौ, निर्मलप्रभा बरदलै, अनंत देवशर्मा, डिम्बेश्वर चलिहा, राजेन्द्र कुमार भूजा, महिम बॅरा, फुलकुमारी कलिता, करबी डेका हाजारिका, भारती बॅरा, महेंद्र बॅरा, शचींद्रकुमार अधिकारी, गगनचंद्र अधिकारी, मनोरमा बरगोहाजि, मुकुट गौ, गोपी तामुलि, आभा बॅरा, रूमू बेगम, दीप्ति देवा शर्मा आदि प्रमुख बाल-कविता लिखने वालों के नाम सामने आते हैं।

बीसवीं सदी के मध्य में पूर्णचंद्र गोस्वामी ने भी चौदह बाल रचनाएँ असमीया साहित्य को दीं। जिन्हें आगे जाकर 'शिशु लेखा मालंच' नामक संग्रह से क्षीरोद कुमार गोस्वामी और दुग्ध चंद्र गोस्वामी ने एकत्रित करके प्रकाशित किया। आज साहित्य अथवा पाठ्यक्रम के जरिये जिन विषयों के प्रति बच्चों को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है- उन विषयों को यथा परिवेश अध्ययन, परिवेश संरक्षण, वन्य जीवों के प्रति ममता आदि विषयों को आज से पचास वर्ष पूर्व ही गोस्वामी जी ने अपनी बाल-कहानियों के माध्यम से व्यक्त करके बच्चों तक ले गए थे।

बाल-साहित्य लेखन में रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने जो मार्ग दिखाया, आगे चलकर अनेक लेखकों ने बालोपयोगी साहित्य की रचना की। अनेक बाल-साहित्यकारों ने इतिहास से रोचक, शिक्षाप्रद घटनाओं को लेकर भी ग्रंथ लिखे। बेणुधर शर्मा ने मणिराम देवान, फुलेश्वरी कुवरी, लाचित बरफुकन आदि वीरों के जीवन-परक ग्रंथ लिखकर बाल-साहित्य भंडार को समृद्ध किया। अतुलचंद्र हाजारिका का नाम भी बाल-साहित्य में प्रातः स्मरणीय है। उनके द्वारा लिखित 'अपेश्वरीर देश' (1952), 'आइतार साधु' (1970), 'सोणाली देश सोणाली साधु' (1980), बच्चों में काफी जनप्रिय रहे। प्रेमधर दत्त के बाल ग्रंथ 'न कथा' (1963), 'भेको भाउना', 'साजि कोवा नाइ' को बच्चों ने काफी अपनाया। उनकी रचना में मित्रता, स्नेह, ठग-प्रपंच आदि पाए जाते हैं। हास्यरस से भरपूर रचनाओं के माध्यम से संदेश देना उनकी बाल-रचनाओं का मूल उद्देश्य था।

इनके अलावा प्रफुल्ल चंद्र गोस्वामी का 'बिलाती होजा', महेश्वर नेउग का 'डावरर सिपारे धुनीया देश', हरिनाथ बरदलै का 'तुनी आरु उँइबाज', अनु बरुवा का 'जापानी साधु', दुलाल बरठाकुर का 'घुमटि जाउरे', लीला गौ का 'रंगमनर कथा', 'पोणाकणर सपोन', अजित कुमार शर्मा का 'फुलमणिर साधु', यदवसेन डेका का 'सोन मइनार साधु', अतुल चंद्र महंत का 'आइता आरु नाति लोरा', प्रफुल्ल चंद्र बरुवा का 'बुद्धियक कौन', प्रफुल्ल चंद्र गोस्वामी का 'आमार देशर गल्प' आदि भी समादृत हुए।

बालोपयोगी भ्रमण कहानी लिखने में साहित्यकारों का योगदान सराहनीय है। इनमें से प्रफुल्ल दत्त गोस्वामी का 'मोर राचिया भ्रमण' (1974), महेंद्रनाथ बॅरा का 'बिदेशर बतरा' (1984), अजित कुमार भुंजा का 'जहर दिनत ताहानिर रजार देशत' (1987), लक्षेश्वर हाजारिका का 'बिलाती नाति आरु देशी कका' (1981) आदि कुछ उल्लेख योग्य रचनाएँ हैं। कैलास शर्मा 1976 से लगातार बाल-साहित्य लेखन से जुड़े हुए हैं। उनके प्रमुख बाल-ग्रंथ हैं- 'नरीया रजार परीया', 'सात भनीर साधु', 'किरणमालार साधु', 'दक्षिणांचलर साधु', 'पर्वतीया साधु', 'साधु माला', 'आख्यानमाला', 'नीतिमाला', 'पदुम कलि', 'भेकुली कुँवरी' आदि।

बाल उपन्यास लिखने वालों की संख्या अन्य की तुलना में कम है। उनमें से नवकांत बरुवा का 'शियाली पालेगै रतनपुर' (1955), 'आखरर जखला' (1958), 'भत उकारे भु' (1960) आज भी बच्चे आग्रह के साथ पढ़ते हैं। योगेन शर्मा का 'एटि जोन जाक-जाक तरा', तथा 'सूरुज उलोवा देशर पिने', लक्ष्मीनाथ फुकन का 'जुलि, रामा आरु सिंहँत', एलि आहमेद का 'रंगमनर रंग', कैलास शर्मा का 'उकुलि-मुकुलि', शुचिब्रता रायचौधरी का 'सुंदर देश', धर्मेश्वर कटकी का सपोन कुँवरी, भगगिरी रायचौधरी का 'मरण विजयी, हरगोविंद शर्मा का 'पाताल पुरी' आदि उल्लेखनीय बाल-उपन्यास हैं। अद्यतन समय में बाल उपन्यासों के क्षेत्र में योगदान देने वालों में से निर्मलप्रभा बरदलै, एलि आहमेद, लावण्य भट्टाचार्य, नूपुर मोमाइदेउ उर्फ त्रैलोक्य भट्टाचार्य, दीप्तिदेवी शर्मा, वीणा शर्मा, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त युगललोचन दास, पुरवी चक्रवर्ती सुत का नाम सर्वोपरि लिया जाता है। त्रैलोक्य भट्टाचार्य द्वारा लिखित 'शियाल शिरोमणि', 'मरकेलेप', 'बिझालि बाइदेउर पदाशालि',

‘जगरा बारीर भूत’, ‘उफाइडांग आरु बेबेरिबांगर साधु’, ‘आटाहप्राण’, ‘उरुलिपुंगार साधु’, ‘उरुलिपुंगार गजारोहन’ आदि तेरह ग्रंथ उपलब्ध हैं।

असमीया बाल-साहित्य को अपने अप्रतिम अवदान से समृद्ध करने वाली लेखिका हरप्रिया बारुकियाल बरगोहाजि के कुल बारह ग्रंथ मिलते हैं। दीप्ति देवा शर्मा का ‘सेउजीया बननित जिलमिल रोडालि’, पुरवी चक्रवर्ती सुत का ‘जन्मदिनर उपहार’, ‘सोन मइनार शुवनि गाँव’ (पुरस्कार प्राप्त), लावण्य भट्टाचार्य का ‘मधुकोष’, सोमेश्वरी बॅरा का ‘धनटिर सपोन’ (पुरस्कार प्राप्त), लीना सन्दिकै का ‘मिछलियार मरण’ भी उल्लेख योग्य बाल-साहित्य हैं। डॉ दिलीप कलिता वर्तमान समय के सफल तथा जनप्रिय बाल-साहित्यकार हैं। उनके कुल नौ बाल-ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। मूलतः विज्ञान के अध्यापक के रूप में सेवारत डॉ कलिता के ग्रंथ हैं- ‘फूलकुँवरि आरु राजकुमार’, ‘सोन मइनार साधु’, ‘जलकुँवरीर साधु’, ‘बान्दर आरु शियालर साधु’, ‘रंग-बिरंगर भूत’, ‘नेजाल राक्षसर साधु’ आदि।

बाल-साहित्य को समृद्धि देने वाली पत्रिकाओं में से स्वाधीनता-पूर्व प्रकाशित ‘अरुणोदय’ और ‘जोनाकी’ का नाम उल्लेखनीय है। आगे जाकर प्राक् स्वाधीनता युग में प्रकाशित- लोरा बंधु (1888), अकन (1915), अरुण (1923), आमार देश (1931), पखिला (1933), न जोन (1934), पारिजात (1940) ने बाल-साहित्यकारों को काफी प्रोत्साहित किया था। स्वाधीनता के पश्चात प्रकाशित बाल-पत्रिकाओं की संख्या अधिक तो है, लेकिन अधिकांश पत्रिकाएँ कम दिन ही टिक पाईं। समादृत पत्रिकाओं में से, रंगधर (1948), काँचिजोन (1948), दीपक (1954-66), विज्ञान-जेउति (1961), जोनबाइ (1961-70), सँफुरा (1983), मौचाक (1984), टिकल (1984), कनकन (1985), विज्ञान सँफुरा (1987), त्रिनयन (1988), ज्ञान-विज्ञान (1990), किशोर (1990), अकनिर अग्रदूत (1995), जिज्ञास (1997), बारह-अठारह, नतुन आविस्कार, छात्र सारथि (2002), रंगमन (2005), ज्ञानकोष (2007) आदि प्रमुख हैं।

भारतीय तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं के उत्तम बाल-ग्रंथों का भी असमीया में अनुवाद हुआ है। प्रवीणा शङ्कीया, योगेश दास, विमल नाथ, गीता उपाध्याय, बासंती लस्कर, आबुल लेइस,

रायहान शाह, डॉ मनिका शङ्कीया ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवदान दिया है।

रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने कहा था- बाल-साहित्य भविष्य-समाज की धरणी है। भविष्य के नागरिक स्वरूप वर्तमान के बच्चों को मानसिक रूप से सशक्त, उद्यमी, कल्पनाशील, भावुक, निष्ठावान, दयावान तथा देशभक्त बनाने में बाल-साहित्य की अहम भूमिका है। इसीलिए बाल-साहित्यकारों पर विशेष दायित्व है कि वे अपनी रचना में बालकों के मनोजगत को सही दिशा प्रदान करने योग्य विषयों को चुनकर अपनी रचना में प्रस्तुत करें। असमीया बाल-साहित्यकार इसी दिशा में कार्य कर रहे हैं।

बदलते युग के साथ-साथ रचनाकारों को भी बदलना पड़ता है। पाठकों की रुचि के अनुरूप तथा बदलते परिवेश से संबंधित विषयवस्तु को लेकर उसके विभिन्न आयाम को अपनी चिंता, बुद्धि के सहारे लेखक अगर प्रस्तुत करने में समर्थ रहता है, तो ही पाठक उसे स्वीकारता है। बाल-साहित्य भी इससे परे नहीं है। वर्तमान बालकों को ‘एक राजा था...’ वाली कहानी सुनाकर संतुष्ट नहीं किया जा सकता है। पहले बच्चे माँ-बाबूजी जो कहते थे, उसे बिना वाक्य-व्यय के स्वीकार कर लेते थे, लेकिन आजकल के बच्चे विज्ञान-प्रौद्योगिकी से उपलब्ध उपकरणों से काफी हद तक परिचित हो गए हैं। जिससे उनके ज्ञान की सीमा बढ़ गई है। उनकी बढ़ती जिज्ञासा को शांत करने के लिए बाल-रचनाकारों को भी विज्ञान से जुड़ी नवीन उपलब्धियों का जानकारी होना आवश्यक हो गया है। एक दूसरी बात यह है कि पूर्व की तुलना में वर्तमान समय में बालकों से जुड़ी समस्याएँ भी बढ़ गई हैं। यहाँ तक कि आजकल के बच्चे उन बातों को भी समझने लगे हैं, जो पहले बड़े लोग भी चर्चा करने से हिचकिचाते थे। फलतः आयु से पूर्व इन बातों से परिचित हो जाने से बच्चों में मानसिक तनाव, चिड़चिड़ाहट, अन्य शारीरिक समस्याएँ बढ़ने लगी हैं। अब बाल-साहित्यकारों की भी जिम्मेदारी बढ़ गई है कि वे सरल-सुबोध तथा मनोरंजक भाव से इन समस्याओं से बच्चों को परिचित कराएँ और उनके सुफल-कुफल का ज्ञान दें। असमीया बाल-साहित्य में अब इस विषय पर अधिक काम करने की आवश्यकता है।

*अध्यापिका, नगाँव कन्या महाविद्यालय, असम